पाठ – कबीर की साखियाँ

शब्दार्थ –

साधु	-	साधू या सज्जन
ज्ञान	-	जानकारी
मेल	-	खरीदना
तरवार	-	तलवार
रहन	-	रहने
म्यान	-	जिसमे तलवार रखीं जाती है
आवत	-	आते हुए
गारी	-	गाली
उलटत	-	पलटकर
होइ	-	होती
अनेक	-	बहुत सारी
कर	-	हाथ
फिरै	-	घूमना
जीभि	-	जीभ
मुख	-	मुँह
माँहि	-	में
मनुवाँ	-	मन
दहुँ	-	दसों
दिसि	-	दिशा
तौ	-	तो
सुमिरन	-	स्मरण
नींदिए	-	निंदा करना
पाऊँ	-	पाँव
तलि	-	नीचे
आँखि	-	आँख
खरी	-	कठिन
दुहेली	-	दुःख देने वाली
जग	-	संसार
बैरी	-	शत्रु

egyanarchive

सीतल - शांति
आपा - स्वार्थ

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मेल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।1।।

आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए,वही एक की एक ।।2।।

माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं ।।3।।

कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ ।।4।।

जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय ।।5।।

कबीर की साखियाँ सारांश –

- पहले दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि हमें मनुष्य की जाति से ज्यादा उसके गुणों को सम्मान करना चाहिए।

- दूसरे दोहे में कबीर जी ने कहा है कि कभी भी अपशब्द के बदले में किसी को अपशब्द मत कहो।

- तीसरे दोहे में कबीरदास जी ने मन की चंचलता का वर्णन किया है। उनके अनुसार इंसान जीभ और माला से भले ही प्रभु का नाम जपता रहता है, लेकिन उसका मन अपनी चंचलता त्याग नहीं पाता है।

- चौथे दोहे में कबीर जी कहते हैं कि कभी भी किसी को उसके छोटे या बड़े होने का घमंड नहीं करना चाहिए, कभी-कभी छोटे लोग भी बड़ों पर बहुत भारी पड़ जाते हैं, जैसे हाथी पर चींटी भारी पड़ जाती है।

- पाँचवें दोहे में संत कबीर कहते हैं कि मानव अपनी मानसिक कमजोरियां दूर करके, अपने संसार को ख़ुशहाली से भर सकता है।

egyanarchive

कबीर की साखियाँ अर्थ सहित –

1- **जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।**
मेल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।1।।

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-3' पाठ- 9 'कबीर की साखियाँ' से ली गई है। इस 'साखी' के संत कवि कबीरदास जी हैं। इस साखी में कवि ने किसी भी मनुष्य की जाति से ऊपर उसके गुणों को महत्त्व दिया है।

अर्थ :- कबीर की साखी की इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हमें कभी भी सज्जन इंसान की जाति पर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि हमें तो उसके गुणों के आधार पर उसका सम्मान करना चाहिए। जैसे, तलवार की कीमत म्यान नहीं, बल्कि तलवार की धार में छिपी होतो है।

कबीर की साखियाँ विशेष:-

1. कवि ने जातिवाद पर तीखा व्यंग्य किया है।
2.कवि ने जाति-पाति, ऊँच-नीच और धर्म के आधार पर मनुष्य में भेदभाव को स्वीकार नहीं किया है।
3. इसमें दोहा छंद है।
4. भाषा सरल और मिश्रित शब्दावली युक्त है।

2- **आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।**
कह कबीर नहिं उलटिए,वही एक की एक।।2।।

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-3' पाठ- 9 'कबीर की साखियाँ' से ली गई है। इस साखी के कवि संत कबीरदास जी है। इस साखी में कवि कहते हैं कि हमें अपशब्द का जवाब अपशब्द में नहीं देना चाहिए।

अर्थ :- प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि किसी के अपशब्दों का जवाब कभी भी अपशब्दों से मत दो। इससे वो अपशब्द बढ़ने के बजाय घटते-घटते ख़त्म हो जाएंगे।

कबीर की साखियाँ विशेष:-

1. 'कह कबीर' में अनुप्रास अलंकार है।
2. इसमें दोहा छंद है।
3. भाषा सरल और मिश्रित शब्दावली युक्त है।

egyanarchive

3- माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।3।।

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-3' पाठ- 9 'कबीर की साखियाँ' से ली गई है। इस साखी के कवि संत कबीरदास जी है। इस साखी में कबीर जी कहते हैं कि अगर हमें ईश्वर को प्राप्त करना है तो एकाग्र होकर सच्चे मन से भक्ति करनी होगी।

अर्थ :- प्रस्तुत दोहे में कबीर जी कहते हैं कि अगर आपका मन प्रभु की भक्ति में नहीं लगता है, तो फिर हाथ में माला लेकर घूमना, मुख से प्रभु का नाम लेना बेकार है। अगर प्रभु को पाना है, तो हमें एकाग्र होकर उनकी भक्ति करनी होगी।

कबीर की साखियाँ विशेष:-

1. 'मुख माँहि' और 'दहुँ दिसि' में अनुप्रास अलंकार है।
2. इसमें दोहा छंद है।
3. भाषा सरल और मिश्रित शब्दावली युक्त है।

4- कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ।।4।।

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-3' पाठ- 9 'कबीर की साखियाँ' से ली गई है। इस साखी के कवि संत कबीरदास जी है। इस साखी में कबीर जी कहते हैं कि हमें किसी भी व्यक्ति को छोटा समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए।

अर्थ :- प्रस्तुत साखी में कबीर जी कहते हैं कि हमें कभी भी किसी को छोटा समझकर उसका निरादर नहीं करना चाहिए। जैसे, घास को छोटा समझकर हर वक़्त दबाना नहीं चाहिए क्योंकि अगर इसका एक तिनका भी आंख में चला जाए, तो हमें बहुत पीड़ा होती है।

कबीर की साखियाँ विशेष:-

1. इसमें दोहा छंद है।
2. भाषा सरल और मिश्रित शब्दावली युक्त है।

5- जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।5।।

egyanarchive

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-3' पाठ- 9 'कबीर की साखियाँ' से ली गई है। इस साखी के कवि संत कबीरदास जी है। इस साखी में कबीर जी ने स्वार्थ, क्रोध जैसी भावनाओं का त्याग करने की बात कही है।

अर्थ :- प्रस्तुत साखी में कबीर जी कहते हैं कि जिस मनुष्य का मन शांत होता है, दुनिया में उसका कोई शत्रु नहीं हो सकता है। यदि दुनिया का हर मनुष्य स्वार्थ, क्रोध जैसी भावनाओं का त्याग कर दे, तो वो दयालु और महान बन सकता है।

कबीर की साखियाँ विशेष:-

1. इसमें दोहा छंद है।
2. भाषा सरल और मिश्रित शब्दावली युक्त है।
3. 'आपा' शब्द अहंकार के लिए प्रयुक्त हुआ है।

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न - 'तलवार का महत्त्व होता है, म्यान का नहीं' – उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -

'तलवार का महत्व होता है, म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाहता है कि असली चीज़ की कद्र की जानी चाहिए। दिखावटी वस्तु का कोई महत्व नहीं होता। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान अथवा उसका मोल उसकी काबिलीयत के अनुसार तय होता है न कि कुल, जाति, धर्म आदि से। उसी प्रकार ईश्वर का भी वास्तविक ज्ञान जरूरी है। ढोंग-आडंबर तो म्यान के समान निरर्थक है। असली ब्रह्म को पहचानो और उसी को स्वीकारो।

प्रश्न -पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति हैं 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर -

कबीरदास जी इस पंक्ति के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित होकर करना चाहिए। इस साखी के द्वारा कबीर केवल माला फेरकर ईश्वर की उपासना करने को ढोंग बताते हैं।

प्रश्न - कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -

घास का अर्थ है पैरों में रहने वाली तुच्छ वस्तु। कबीर अपने दोहे में उस घास तक की निंदा करने से मना करते हैं जो हमारे पैरों के तले होती है। कबीर के दोहे में 'घास' का विशेष अर्थ है। यहाँ घास दबे-कुचले व्यक्तियों की प्रतीक है। कबीर के दोहे का संदेश यही है कि व्यक्ति या प्राणी चाहे वह जितना भी छोटा हो उसे तुच्छ समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

egyanarchive

प्रश्न - मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेनेवाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

उत्तर -

"जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

प्रश्न - "या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।"
"ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।"
इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। 'आपा' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? क्या 'आपा' स्वार्थ के निकट का अर्थ देता है या घमंड का?

उत्तर -

"या आपा को . . . . . आपा खोय।" इन दो पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने की बात की गई है। यहाँ 'आपा' अंहकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'आपा' घमंड का अर्थ देता है।

प्रश्न - आपके विचार में आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है? स्पष्ट करें।

उत्तर -

आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में अंतर हो सकता है –
1. आपा और आत्मविश्वास – आपा का अर्थ है अहंकार जबकि आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास।
2. आपा और उत्साह – आपा का अर्थ है अहंकार जबकि उत्साह का अर्थ है किसी काम को करने का जोश।

प्रश्न - सभी मनुष्य एक ही प्रकार से देखते-सुनते हैं पर एकसमान विचार नहीं रखते। सभी अपनी-अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हैं। पाठ में आई कबीर की किस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं, एकसमान होने के लिए आवश्यक क्या है? लिखिए।

उत्तर -

"आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।।"
मनुष्य के एक समान होने के लिए सबकी सोच का एक समान होना आवश्यक है।

प्रश्न - कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है?

उत्तर -

कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षात् ज्ञान दिया गया है। कबीर समाज में फैली कुरीतियों, जातीय भावनाओं, और बाह्य आडंबरों को इस ज्ञान द्वारा समाप्त करना चाहते थे।

egyanarchive

भाषा की बात

प्रश्न - बोलचाल की क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन होता है जैसे वाणी शब्द बानी बन जाता है। मन से मनवा, मनुवा आदि हो जाता है। उच्चारण के परिवर्तन से वर्तनी भी बदल जाती है। नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनका वह रूप लिखिए जिससे आपका परिचय हो।

ग्यान, जीभि, पाऊँ, तलि, आंखि, बरी।

उत्तर -

ग्यान – ज्ञान

जीभि – जीभ

पाऊँ – पाँव

तलि – तले

आँखि – आँख

बरी – बड़ी

egyanarchive